कुलुस्सियों 1:9

“इस कारण, जब से हमने आपके विषय में सुना है, हम आपके लिए प्रार्थना करना नहीं छोड़ते। हम निरंतर प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर आपको अपनी इच्छा का ज्ञान दे, जो आत्मा की सारी बुद्धि और समझ के द्वारा होता है।” — कुलुस्सियों 1:9 (HSB)

इस पद में, पौलुस एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक प्राथमिकता को व्यक्त करते हैं: कि विश्वासियों को ईश्वर की इच्छा का ज्ञान प्राप्त होना चाहिए। यह ज्ञान केवल बौद्धिक नहीं है, बल्कि इसमें आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और समझ (सिनेसीस) शामिल है, जो पवित्र आत्मा द्वारा दी जाती है।

ईश्वर की इच्छा क्या है?

ईसाई धर्मशास्त्र में, ईश्वर की इच्छा को आमतौर पर तीन आयामों में समझा जाता है:

1. ईश्वर की सार्वभौमिक इच्छा

यह ईश्वर की अपरिवर्तनीय योजना को दर्शाता है, जो पूरी इतिहास

को नियंत्रित करती है। यह छिपी हुई है और इसे कोई रोक नहीं सकता।

“सर्वशक्तिमान यहोवा ने शपथ ली है, ‘जैसा मैंने योजना बनाई है, वैसा ही होगा; जैसा मैंने निश्चय किया है, वैसा ही होगा।'” — यशायाह 14:24 (BSI)

“हमारा परमेश्वर स्वर्ग में है; वह जो चाहता है करता है।” — भजन संहिता 115:3 (HSB)

यह ईश्वरीय सार्वभौमिकता के सिद्धांत के अनुरूप है। ईश्वर के अंतिम उद्देश्य (जैसे हमारे उद्धार के लिए मसीह का क्रूस पर चढ़ना — प्रेरितों के काम 2:23) बिल्कुल उसी तरह पूरा होते हैं जैसे उसने योजना बनाई है।

2. ईश्वर की नैतिक इच्छा (Preceptive Will)

यह वह इच्छा है जो ईश्वर ने शास्त्रों मे प्रकट की है — जो वह सभी लोगों से पालन करने के लिए कहते हैं।

“यह परमेश्वर की इच्छा है कि आप पवित्र बनें; कि आप यौन पाप

से बचें।” — 1 थिस्सलुनीकियों 4:3 (HSB)

“हर परिस्थिति में धन्यवाद दो; क्योंकि यही मसीह यीशु में
आपकी ओर से परमेश्वर की इच्छा है।” — 1 थिस्सलुनीकियों
5:18 (HSB)

“झूठ मत बोलो। चोरी मत करो। एक दूसरे से प्रेम करो।” — (रोमियों 13, निर्गमन 20 में विविध आदेश)

यह ईश्वर की पवित्रता और नैतिक चरित्र को दर्शाता है और पवित्रिकरण के नैतिक पहलू के अनुरूप है — मसीह की तरह बनने की प्रक्रिया (रोमियों 8:29)।

3. ईश्वर की व्यक्तिगत/विशेष इच्छा

यह ईश्वर की अनोखी मार्गदर्शन है, जो व्यक्तिगत निर्णयों, जैसे करियर, संबंध, या मंत्रालय कार्य के लिए होती है।

“तुम दाहिनी ओर मुड़ो या बाईं ओर, तुम्हारे कान पीछे से एक आवाज़ सुनेंगे, कहती है, ‘यह मार्ग है; इसमें चलो।'” —

यशायाह 30:21 (BSI)

“आत्मा ने फिलिप को कहा, ‘उस रथ की ओर जाओ और उसके पास रहो।'” — प्रेरितों के काम 8:29 (HSB)

यह ईश्वरीय प्राविडेंस और व्यक्तिगत बुलाहट से जुड़ा है, जो व्यक्ति-विशेष होती है और आध्यात्मिक साधन और समर्पण के माध्यम से समय के साथ पहचानी जाती है।

मैं ईश्वर की इच्छा कैसे खोज सकता हूँ?

बाइबल कुछ मुख्य तरीके बताती है, जिनसे विश्वासियों को उनके जीवन के लिए ईश्वर की इच्छा समझ में आती है:

1. प्रार्थना — परमेश्वर से संबंध स्थापित करना

“यदि तुम्हारे किसी में बुद्धि की कमी है, तो वह परमेश्वर से माँगे, जो सबको बिना दोष पाए उदारता से देता है, और यह उसे दिया जाएगा।” — याकूब 1:5 (HSB)

“प्रार्थना में सतत लगे रहो, सजग और धन्यवादपूर्ण रहो।” — कुलुस्सियों 4:2 (HSB)

प्रार्थना कृपा का साधन है, एक आध्यात्मिक अनुशासन जिसके द्वारा विश्वासियों को परमेश्वर के साथ संबंध बनाने और उसकी बुद्धि प्राप्त करने का अवसर मिलता है।

2. परमेश्वर का वचन — विवेक की नींव

“तेरा वचन मेरे पांव के लिए दीपक, मेरी राह के लिए प्रकाश है।” — भजन संहिता 119:105 (HSB)

“संपूर्ण शास्त्र परमेश्वर से प्रेरित है और शिक्षा देने, डाँटने, सुधारने और धर्म में प्रशिक्षण देने के लिए उपयोगी है।” — 2 तीमुथियुस 3:16–17 (HSB)

सोल्ला स्क्रिप्टुरा (केवल शास्त्र) के सिद्धांत के अनुसार,

बाइबल विश्वास और जीवन के लिए सर्वोच्च प्राधिकरण है। ईश्वर की सामान्य इच्छा हमेशा शास्त्रों के अनुरूप होती है, और व्यक्तिगत मार्गदर्शन कभी इसके विपरीत नहीं होता।

3. ईसाई समुदाय और परामर्श — शरीर की बुद्धि

“सलाह के अभाव में योजना विफल हो जाती है, परंतु कई
सलाहकारों के साथ वह सफल होती है।” — नीति वचन 15:22 (HSB)

“जहां मार्गदर्शन नहीं है, वहां लोग गिर जाते हैं; परंतु परामर्शकारों की प्रचुरता में सुरक्षा है।” — नीति वचन
11:14 (HSB)

“पवित्र आत्मा और हम सभी को यह अच्छा लगा…” — प्रेरितों के काम 15:28 (HSB)

चर्ची विज्ञान (Ecclesiology) में, मसीह का शरीर पारस्परिक उत्साह और विवेक में एक साथ कार्य करता है। यह सभी विश्वासियों

की पुरोहिती (1 पतरस 2:9) और सामूहिक विवेक की आवश्यकता को दर्शाता है।

4. आध्यात्मिक विवेक — बुद्धि और परिपक्वता में वृद्धि

“इस संसार की नकल मत करो, परंतु अपने मन को नवीनीकृत करके बदलो। तब तुम यह परख पाओगे कि ईश्वर की इच्छा क्या है — उसकी भली, पसंदीदा और पूर्ण इच्छा।” — रोमियों 12:2 (HSB)

“परंतु सख्त आहार परिपक्व लोगों के लिए है, जो अभ्यास
द्वारा भला और बुरा अलग करना सीख चुके हैं।” — इब्रानियों
5:14 (HSB)

यह पवित्रिकरण और पवित्र आत्मा के कार्य से जुड़ा है। जैसे- जैसे हम मसीह में बढ़ते हैं, हम विवेक विकसित करते हैं — एक आध्यात्मिक “रडार” जो हमें बताता है कि क्या ईश्वर के हृदय के अनुरूप है। इसे पौलुस ने “मसीह का मन” कहा (1 कुरिन्थियों 2:16)।

यह क्यों महत्वपूर्ण है?

“हर कोई जो मुझसे ‘प्रभु, प्रभु’ कहता है, स्वर्ग के राज्य
में प्रवेश नहीं करेगा, परंतु केवल वही जो मेरे स्वर्गीय
पिता की इच्छा करता है।” — मत्ती 7:21 (HSB)

“संसार और उसकी इच्छाएँ गुजर जाती हैं, परंतु जो कोई ईश्वर
की इच्छा करता है वह सदा जीवित रहेगा।” — 1 योहान 2:17 (HSB)

यह केवल नाम के ईसाईपन और सच्चे शिष्यत्व के बीच अंतर को दिखाता है। ईश्वर की इच्छा को करना केवल ज्ञान का मामला नहीं है, बल्कि आज्ञाकारिता का परिणाम है, जो उद्धार विश्वास का फल है (याकूब 2:17)।

व्यावहारिक सार — ईश्वर की इच्छा में चलना

अंतिम प्रोत्साहन:
“प्रभु हमेशा तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा; वह तुम्हारी आवश्यकताओं को पूरा करेगा… और तुम्हारी हड्डियों को मजबूत करेगा।” — यशायाह 58:11 (HSB)

ईश्वर की इच्छा को जानना और करना किसी विशेष वर्ग का रहस्य नहीं है, बल्कि हर विश्वासी के लिए बुलावा है। प्रार्थना, शास्त्र, समुदाय और आध्यात्मिक परिपक्वता के माध्यम से, ईश्वर अपनी इच्छा उन लोगों को प्यार से प्रकट करते हैं जो उसे खोजते हैं।

“तुम मुझे खोजोगे और पाओगे जब तुम पूरे मन से मुझे खोजोगे।”
— यिर्मयाह 29:13 (HSB)

धन्य रहें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp